PGCMHT

मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.एम.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2019

(जनवरी 2019 और जुलाई 2019 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.एम.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2019

(जनवरी 2019 और जुलाई 2019 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.सी.एम.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2019 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	**जुलाई 2019 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए**
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	**31.03.2019**	**30.09.2019**
एम.टी.टी.-004 मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	**31.03.2019**	**30.09.2019**
एम.टी.टी.–005 मलयालम–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	**31.03.2019**	**30.09.2019**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ....

नामांकन संख्या : ....
नाम : ....
पता : ....
....

पाठ्यक्रम कोड :..
पाठ्यक्रम का शीर्षक : ....
सत्रीय कार्य कोड : ....
अध्ययन केंद्र का नामः ....

हस्ताक्षर :..
तिथि : ....

---

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6). अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एमटीटी-001)

सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोडः पीजीसीएमएचटी
पाठ्यक्रम कोडः एमटीटी-001
पूर्णांकः 100

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 300 शब्दों में उत्तर दीजिए।

---

1. भारतीय भाषा परिवारों के वर्गीकरण को समझाते हुए उनके बारे में प्रकाश डालिए।

2. बहुभाषिक समाजों में अनुवाद की प्रक्रिया के बारे में समझाएं।

3. नाटकों का अनुवाद किस तरह दूसरी साहित्यिक सामग्री से जटिल है? सोदाहरण चर्चा कीजिए।

4. कविता का अनुवाद करते समय गद्य की अपेक्षा किस तरह की सावधानियां बरतने की जरूरत होती है? सोदाहरण विवेचन कीजिए।

5. आशु अनुवाद की कब और कहाँ जरूरत पड़ती है ? इसका महत्व भी बताइए।

6. अनुवाद में पुनर्सृजन से आप क्या समझते हैं ? साहित्यिक अनुवाद में इसका महत्व स्पष्ट कीजिए।

7. साहित्यिक सामग्री और सूचनात्मक सामग्री के अनुवाद में क्या अंतर होता है ? सोदाहरण चर्चा कीजिए ।

8. मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय किस प्रकार दो भाषाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक बनावट बाधा पैदा करती है ? उदाहरण सहित बताइए।

9. विज्ञापनों का अनुवाद करते समय किस प्रकार की सावधानी बरतने की जरूरत होती है ? उदाहरण सहित समझाइए।

10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
    (क) व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में अनुवाद की भूमिका
    (ख) मशीनी अनुवाद की जरूरत और विश्वसनीयता

मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन (एम.टी.टी.–004)

(जनवरी 2019 और जुलाई 2019 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–004
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–004 / एएसटी / (टी.एम.ए) / 2019

अधिकतम अंक : 100

---

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग तीन सौ शब्दों में दीजिए। 10 × 2 = 20

(क) किसी भी भाषा का अध्ययन उसकी संस्कृति की जानकारी के बिना पूर्ण नहीं होता। केरल की संस्कृति का परिचय देते हुए मलयालम भाषा और साहित्य पर संस्कृत की परंपरा के प्रभाव का उल्लेख कीजिए।

(ख) मलयालम और हिंदी की लिंग व्यवस्था की तुलना कीजिए।

2. निम्नलिखित मलयालम शब्दों के हिन्दी पर्याय बताइए। 5

1 ചരിത്രം
2 ആരോഗ്യം
3 തോട്ടം
4 തള്ളവിരൽ
5 സൂചി
6 പിറന്നാൾ
7 അടുക്കള
8 പിതൃസഹോദരി
9 അംഗീകാരം
10 വെളുപ്പ്
11 ഇഞ്ചി
12 വിശപ്പ്
13 ജലദോഷം
14 ചെലവ്
15 ബഹുമാനിക്കുക
16 ഭേദഗതി
17 ചെറുപയർ
18 മിക്കവാറും
19 മധുരനാരങ്ങ
20 കണ്ണിടപാട്

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के मलयालम पर्याय बताइए : 5

1	अखबार	11	सुस्त
2	मक्खन	12	नाखून
3	पाजेब	13	सलाह
4	तलवार	14	मज़बूत
5	महँगा	15	प्रबंधक
6	तोई	16	ब्याज
7	दौरा कार्यक्रम	17	मौसम
8	कहावत	18	टोकरी
9	बंदरगाह	19	रिश्तेदार
10	भूरा	20	खिलौना

4 निम्नलिखित वाक्यों को हिंदी में अनुवाद कीजिए : 20

1) ഈ കത്തിന് എത്രയും വേഗം മറുപടി അയക്കുക.

2) വല്യച്ഛൻ ഇന്നലെ ഹൈദരാബാദിൽ നിന്നും മടങ്ങി.

3) കേരളത്തിൽ കുരുമുളക്, ഏലം, ഗ്രാമ്പ് ഇവയും കൃഷി ചെയ്യുന്നു.

3) ഈ വായനശാലയിൽ ധാരാളം പുസ്തകങ്ങൾ ഉണ്ട്

4) തിരഞ്ഞെടുപ്പിനു ശേഷം പുതിയ സർക്കാർ രൂപീകരിക്കപ്പെടും

5) മഴ ~~[illegible]~~ തുടങ്ങിയപ്പോൾ ഞാൻ മൈതാനത്തായിരുന്നു.

6) നിനക്ക് വിശക്കുന്നുവോ? വരൂ, ഭക്ഷണം കഴിക്കാം.

7) ഒട്ടകത്തിന് മരുഭൂമിയിൽ സഞ്ചരിക്കാൻ കഴിയും.

8) നാളെ ബാങ്ക് അവധിയാണെന്ന് ആര് പറഞ്ഞു?

9) അദ്ധ്യാപകൻ വരുന്നതിനു മുമ്പ് കുട്ടികൾ ബഹളം വച്ചുകൊണ്ടിരുന്നു.

10) നാം പാവപ്പെട്ടവരെ സഹായിക്കണം.

11) നാടകം തുടക്കം മുതൽ അവസാനം വരെ രസകരമായിരുന്നു.

12) ഗ്രാമത്തിൽ വാർത്തകൾ വൈകിയാണ് കിട്ടുന്നത്.

13) നേതാവ് ~~[illegible]~~ വരാൻ താമസിച്ചു, എന്തെന്നാൽ വഴിയിൽ അപകടം പറ്റി.

14) അച്ഛൻ പറഞ്ഞ കാര്യങ്ങൾ മറന്നു പോയി

15) ഇന്നലത്തെ വെയിലിന് ചൂട് ഉണ്ടായിരുന്നില്ല.

16) ഓടുന്ന വണ്ടിയിൽ നിന്ന് ഇറങ്ങരുത്

17) താങ്കൾക്ക് ജർമ്മൻ ഭാഷ അറിയാമോ?

18) ശുക്കിലെ തന്നെ ശൂന്യതയിൽ ഉറങ്ങുന്ന ആൾ ആരാണെന്ന് നിങ്ങൾക്ക് അറിയാമോ?

19) താങ്കൾ എം.ടി. വാസുദേവൻ നായരുടെ 'നലുകെട്ട്' എന്ന നോവൽ വായിച്ചിട്ടുണ്ടോ?

20) മഹാബലിയുടെ ഭരണകാലത്ത് മോഷണമോ ചതിയോ ഉണ്ടായിരുന്നില്ല.

5 (क) निम्नलिखित मुहावरों / लोकोक्तियों का आशय हिंदी में स्पष्ट कीजिए : 10

1) പൊടിപൊടിക്കുക
2) ഒഴിവുകഴിവ് പറയുക.
3) തടിതപ്പുക.
4) കണ്ണിലെ കരട്.
5) താളം പിഴക്കുക.
6) അരക്കുടം അലയ്ക്കും, നിറകുടം തുളുമ്പില്ല.
7) ഇന്നലെ പെയ്ത മഴയിൽ ഇന്നു കുരുത്ത തകര
8) മരമില്ലാത്ത നാട്ടിൽ ആവണക്ക് മഹാമരം.
9) ഗതികെട്ടാൽ പുലി പുല്ലും തിന്നും
10) പുത്തനച്ചി പുരപ്പുറം തൂക്കും.

ख)

निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों के लिए हिंदी लोकोक्तियाँ / मुहावरे लिखिए । 10

1). വിളക്കിൻ ചുവട്ടിൽ ഇരുട്ട്

2). സ്വന്തം കാലിൽ നിൽക്കുക

3) കണ്ണ് നട്ടിരിക്കുക

4) കണ്ണീര് കുടിക്കുക

5) മുഖത്ത് കരി തേയ്ക്കുക

6) എല്ലു മുറിയെ പണിതാൽ പല്ലു മുറിയെ തിന്നാം.

7) ഒരു വെടിക്ക് രണ്ടു പക്ഷി.

8) കുരയ്ക്കും പട്ടി കടിക്കില്ല.

9) കാര്യം കാണാൻ കഴുതക്കാലും പിടിക്കണം.

10) കക്കാൻ പഠിച്ചാൽ നിൽക്കാനും പഠിക്കണം.

6 निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10x2=20

(क)

"ശരീരമാദ്യം ഖലുധർമ്മസാധനം"

സ്വധർമ്മം അനുഷ്ഠിക്കാനുള്ള ഉപകരണമാണ് ശരീരം. പ്രസ്തുത ശരീരത്തിൽ പ്രാണൻ തടസ്സം കൂടാതെ സഞ്ചരിച്ച് ഇന്ദ്രിയങ്ങളെയും മറ്റും സുഗമമായി പ്രവർത്തിപ്പിക്കണമെങ്കിൽ അതിനനുയോജ്യമായ ഭക്ഷണക്രമവും ചര്യകളും ശീലിക്കേണ്ടിയിരിക്കുന്നു.

വൈശ്വാനരഭാവത്തിൽ ശരീരത്തിനുള്ളിൽ കുടികൊള്ളുന്ന ദേവന് അർപ്പിക്കുന്ന ഹവിസ്സ് (ഹോമദ്രവ്യം) ആണ് ആഹാരം എന്ന് സങ്കല്പിക്കപ്പെടുന്നു. ദേവന് സമർപ്പിക്കാൻ യോഗ്യമായ ഭക്ഷണങ്ങൾ തന്നെയാണ് മനുഷ്യനും ഭക്ഷിക്കേണ്ടതെന്ന് സാരം.

ശരീരത്തെ ക്ഷേത്രമായും ശരീരത്തിനകത്ത് കുടികൊള്ളുന്ന ജീവാത്മാവിനെ ഈശ്വരചൈതന്യമായും കാണുന്ന ഭാരതീയ പാരമ്പര്യത്തിൽ ഈശ്വരന് നിവേദിക്കുവാൻ കൊള്ളാവുന്നവ മാത്രമാണ് ഭക്ഷ്യയോഗ്യമായി കരുതപ്പെട്ടിരുന്നത്.

അമിതാഹാരംകൊണ്ടോ, അനാഹാരം (കഠിനമായ ഉപവാസം) കൊണ്ടോ ശരീരത്തെ ക്ലേശിപ്പിക്കുന്നവർ ദൈവത്തിന്റെ ആലയത്തെയാണ് ജീർണ്ണിപ്പിക്കുന്നത് എന്ന് ഗീതയിൽ ഭഗവാൻ ശ്രീകൃഷ്ണൻ രേഖപ്പെടുത്തിയിരിക്കുന്നു.

(ख)

എഴുത്തിന്റെ ആരംഭം എന്നായിരുന്നു? എങ്ങനെയായിരുന്നു? എഴുത്തില്ലാത്ത കാലത്തിന്റെ കഥ എങ്ങനെയറിയും? മണ്ണിന്നടിയിലും ആൾപ്പെരുമാറ്റമില്ലാത്ത പാറപ്പൊത്തുകളിലും മറ്റും അറിയപ്പെടാതെ കിടന്ന പഴയ വസ്തുക്കളെ അടിസ്ഥാനപ്പെടുത്തിയാണ് പ്രാചീനമനുഷ്യന്റെ ജീവിതത്തെപ്പറ്റി തുച്ഛമെങ്കിലും വിലപ്പെട്ട അറിവു കിട്ടുന്നതു്. പുരാതത്വം എന്ന പേരിൽ അതിപ്രധാനമായ ഒരു വിജ്ഞാനശാഖതന്നെ രൂപപ്പെട്ടുവന്നതു് പഴയ വസ്തുക്കളെ ഖനനംചെയ്തെടുത്തു പഠിച്ചുകൊണ്ടാണ്. കന്മഴുകൾ, കലപ്പൊട്ടുകൾ, പണിയായുധങ്ങൾ, ആഭരണങ്ങൾ, മനുഷ്യന്റെയും മൃഗങ്ങളുടെയും അവശിഷ്ടങ്ങൾ എന്നിങ്ങനെ അതിവിപുലമാണ് പുരാവസ്തുക്കളുടെ ലോകം. പുരാവസ്തുക്കളുടെ വിജ്ഞാനം നേടിയവരെ പുരാതത്വജ്ഞന്മാർ എന്നു പറയുന്നു. പുരാവസ്തുക്കൾ ഒട്ടുമുക്കാലും പൊട്ടിത്തകർന്ന നിലയിലാണ് കൈയിൽ കിട്ടുക. പുരാതത്വജ്ഞർ അവയെ കരുതലോടെ കൂട്ടിച്ചേർത്തു് പഴയ രൂപത്തിലാക്കും. പഠനം കഴിഞ്ഞു് അത്തരം വസ്തുക്കൾ കാഴ്ചബംഗ്ലാവുകളിൽ സംരക്ഷിച്ചു പ്രദർശിപ്പിക്കും. അവ പിന്നീടുവരുന്നവർക്കു് ഉപയോഗിക്കാൻ കഴിയും. ഇമ്മട്ടിൽ പുരാതത്വജ്ഞന്മാർ കണ്ടെത്തിയ ചില വസ്തുക്കളുടെ സഹായത്താലാണ് അതിപ്രാചീനകാലത്തു് മനുഷ്യർ തമ്മിൽ ആശയവിനിമയം നടത്തിയതിന്റെ അടയാളങ്ങൾ അറിയപ്പെട്ടതു്.

7) निम्नलिखित अनुच्छेद को मलयालम में अनुवाद कीजिए : 10

प्रकृति और मानव पंचतत्व-पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि व गगन के निर्मित है। पंचतत्वों में संतुलन से मनुष्य के हृदय, मन, तन व आत्मा को शांति और आनंद की अनुभूति होती है। इन्हीं तत्वों को नृत्य-रचना 'समवेत' में पेश किया गया, जिसकी अवधारणा कथक नृत्यांगना रचना यादव और नृत्य परिकल्पना अदिती मंगलदास ने की थी।

नृत्य समारोह का आयोजन सितंबर को इंडिया हैबिटाट संटर के स्टेन ऑडिटोरियम नई दिल्ली में किया गया। 'दी दृष्टिकोण डांस फाउंडेशन' के कलाकार गौरी दिवाकर, रश्मि उप्पल, आनंदिता, रचना यादव और धीरेंद्र तिवारी ने नृत्य रचना को पेश किया।

नृत्य रचना पांच खंडों में पिरोई गई थी। पहले अंश में पृथ्वी का चित्रण था। यह अथर्ववेद के पृथ्वी-श्लोक पर आधारित था। नत्यांगना आनंदिता और नर्तक धीरेंद्र ने कथक के शुद्ध नृत्य को पेश किया। पृथ्वी के चक्रों को दर्शाते नृत्य का आरंभ धीमी गति के चक्कर से हुआ। यहीं 'माता भूमि पुत्रोहं' के श्लोक पर भावों को संक्षिप्त रूप में पेश किया।

दूसरे अंक में बंदिश - 'मनवा तोरे संग बह-बह जाए' पर भावों और शुद्ध नृत्य को पेश किया गया। 'जल' के प्रवाह और गहराई को प्रेम से तुलनात्मक रूप में चित्रित किया गया। जल के प्रवाह का चित्रण चलन से हुआ। रश्मि ने नौ मात्रा की ताल वसंत में कुछ टुकड़े और तिहाइयाँ पेश कीं। रश्मि की एक से सात अंकों की तिहाई की प्रस्तुति आकर्षक थी। नृत्यांगना गौरी ने शिखर ताल में कुछ तिहाइयां और परण पेश किया। गौरी ने एक तिहाई में हर सम को एक नए अंदाज में पेश कर दर्शकों को मोहित किया।

— x —

मलयालम–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद (एम.टी.टी.–005)
(जनवरी 2019 और जुलाई 2019 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–005
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–005 / एएसटी / (टी.एम.ए) / 2019

अधिकतम अंक : 100

I. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए 10

1) ആവശ്യപ്പെട്ട കടലാസുകൾ അടിയിൽ വച്ചിട്ടുണ്ട്.

2) ഇപ്പോൾ നാളികേരത്തിന് വില കുറവാണ്, എന്നാൽ ഉള്ളിക്ക് വില കൂടുതലാണ്.

3) ഞങ്ങൾക്ക് രാത്രി ഒമ്പതു മണിക്ക് മരുന്നു കഴിക്കണമായിരുന്നു.

4) ജീവികളുടെ ഇടയിൽ മനുഷ്യനു മാത്രമേ ~~[illegible]~~ മരണത്തെക്കുറിച്ച് ബോധമുള്ളൂ.

5) ഞാൻ ഇന്നലെ പറഞ്ഞ കാര്യങ്ങൾ ഓർക്കുന്നുവോ?

6) ഈ സർവകലാശാലയിൽ ആയിരം വിദ്യാർത്ഥികൾ പഠിക്കുന്നു.

7) നിങ്ങൾ ഓടുന്ന വേഗത്തിൽ എനിക്ക് ഓടാൻ സാധിക്കുകയില്ല

8) പകലിൽ ഉറങ്ങുന്നത് നല്ലതല്ല.

9) അച്ഛൻ എന്നെ പഠിക്കാൻ പോകാൻ അനുവദിക്കുന്നില്ല.

10) ഒരേ മനുഷ്യനിൽ തന്നെ വ്യത്യസ്തങ്ങളായ ഉ- പരസ്പര ബന്ധമില്ലാത്ത- സ്വഭാവങ്ങൾ അന്തർ- ലീനമായിരിക്കുന്നു.

2. निम्नलिखित शब्दों का मलयालम और हिंदी अर्थ बताइए । 5

	मलयालम अर्थ	हिंदी अर्थ
1) संकट		
2) संतोष		
3) आलोचना		
4) समाधान		
5) राजि		
6) सूचना		
7) संकेत		
8) संभावना		
9) प्रपंच		
10) उपन्यास		
11) भेद		
12) आक्षेप		
13) परिपाटी		
14) अनुवाद		
15) कल्याण		
16) शिक्षा		
17) संभव		
18) साधु		
19) दाह		
20) गीत		

3. कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके मलयालम और हिंदी में समान पर्याय प्रचलित हैं; जैसे

उर्दू मूलक शब्द	मलयालम	हिंदी
मेहमान	अतिथि	अतिथि

नीचे ऐसे कुछ शब्द दिए गए हैं, उनके मलयालम और हिंदी पर्याय बताइए 5

1) मंज़ूरी
2) मेहनत
3) मिसाल
4) इजाज़त
5) इंतज़ार
6) तरक्की
7) शुरुआत
8) कोशिश
9) दौलत
10) निशान
11) तारीफ़
12) सहारा
13) रहम
14) हिस्सा
15) दुआ
16) अफ़सोस
17) रोशनी
18) बादशाह
19) इंसाफ़
20) तरीका

4. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए

$7 \times 10 = 70$

1) മുഹമ്മദ് പ്രവാചകൻ വാണിജ്യാവശ്യങ്ങൾക്ക് ഇറാക്കിലും മറ്റും വന്നുകൊണ്ടിരുന്ന കാലത്ത് യോഗഗുരുക്കന്മാരിൽ നിന്ന് ധ്യാനവും മറ്റും അഭ്യസിച്ചിരുന്നതായി ന്യായമായും അനുമാനിക്കാം. പർവ്വതപ്രാന്തപ്രദേശത്തുള്ള ഒരു ഗുഹയിൽ ധ്യാന നിമഗ്നനായി ഇരുന്നതിന് ശേഷമാണല്ലോ പ്രവാചകന് വെളിപാട് ലഭിച്ചത്. മുഹമ്മദ് നബി വഴി അവതീർണ്ണമായ ഇസ്ലാമിക ധർമ്മത്തിൽ അനുശാസിച്ചിട്ടുള്ള നമസ്കാരത്തിന്റെ സമയക്രമങ്ങൾ, ഇരിക്കുന്ന രീതി, ശുചീകരണനിയമങ്ങൾ തുടങ്ങിയവയ്ക്ക് യോഗവിദ്യയുടെ പല പ്രക്രിയകളുമായും സാമ്യമുണ്ട്.

ബൗദ്ധധർമ്മം, ജൈനധർമ്മം എന്നിവയ്ക്ക് യോഗമാർഗ്ഗവുമായുള്ള ബന്ധത്തെപ്പറ്റി വിവരിക്കേണ്ട ആവശ്യമില്ലല്ലോ.

എല്ലാ ധർമ്മങ്ങളും (religions) അതാത് കാലത്തിനും ദേശത്തിനും അവസ്ഥയ്ക്കും വേണ്ടി രൂപപ്പെട്ട് വന്നതാണ്. സർവ്വകാലത്തേക്കും സർവ്വദേശത്തിലും സർവ്വാവസ്ഥയിലും ഇവയുടെ പുറം ചട്ടക്കൂടുകളും ആചാരങ്ങളും പ്രത്യക്ഷരം മാറ്റം കൂടാതെ പ്രാബല്യത്തിൽ കൊണ്ടുവരാൻ, അമിതോൽസാഹികളായ അനുയായികൾ ശ്രമിക്കുന്നതാണ് ഇവയുമായി ബന്ധപ്പെട്ടുണ്ടാകുന്ന എല്ലാ പ്രശ്നങ്ങൾക്കും കാരണം. ഇവയുടെയെല്ലാം ഏകമായ അന്തഃസത്ത (Essence) യിൽ ഇവരാരും ശ്രദ്ധിക്കാറുമില്ല.

2) പ്രകൃതി വിഭവങ്ങളുൾപ്പെടെയുള്ളവയുടെ സംരക്ഷണം ആരുടെ ഉത്തരവാദിത്വമെന്ന ചോദ്യമുയരുന്നു . പൊതുനിരപ്പിൽ മാലിന്യം ഉപേക്ഷിക്കുന്ന വ്യക്തിയുടെ ചിന്ത മാലിന്യം നീക്കം ചെയ്യുന്ന ചുമതല മറ്റാരുടെയോ ആണെന്നാണ്. മാലിന്യ നീക്കത്തിനായി ഒരുക്കുന്ന സന്നാഹങ്ങളും ചെലവും തന്റേതു കൂടിയാണെന്ന ബോധമുണ്ടെങ്കിൽ ഒരിക്കലും മാലിന്യം വലിച്ചെറിയില്ല.

മഴക്കാലത്ത് ജലം സംരക്ഷിച്ചാൽ മാത്രമേ വേനലിൽ ജലസ്രോതസ്സിൽ ജലമുണ്ടാവുകയുള്ളു എന്ന സാമാന്യതത്ത്വം നാം പലപ്പോഴും ഓർക്കാറില്ല . വേനൽക്കാലത്ത് ജലത്തെക്കുറിച്ച് ചർച്ച ചെയ്യുകയും മഴയത്ത് ആവശ്യമുള്ള നടപടികൾ എടുക്കാതിരിക്കുകയും ചെയ്യുന്ന സമുഹത്തിന് ജീവനുണ്ടെന്ന് പറഞ്ഞു കൂടാ.

ശുദ്ധജലം എല്ലാവർക്കും ലഭിക്കുന്നിടത്ത് ആരോഗ്യപ്രശ്നങ്ങൾ കുറഞ്ഞിരിക്കുമെന്നും , വ്യക്തികളുടെ പ്രവർത്തനങ്ങളുൾപ്പെടെയുള്ള കാരണങ്ങൾ കൊണ്ടാണ് ജലം അശുദ്ധമാകുന്നതെന്നും പകർച്ചവ്യാധികളുണ്ടായാൽ അവ പലപ്പോഴും സമുഹത്തെയാകെ ബാധിക്കുമെന്നും തിരിച്ചറിയപ്പെടുന്നില്ല. ജല വൈദ്യുത പദ്ധതിയെ ആശ്രയിക്കുന്ന രാജ്യത്ത് കാടുള്ളിടത്തോളം മാത്രമേ അണക്കെട്ടുകളിൽ ധാരാളം ജലമെത്തുകയുള്ളു എന്ന് തിരിച്ചറിയണം.

3)

ഇപ്പോൾ പാക്കിസ്ഥാനിൽ പെട്ട സിന്ധ് ദേശത്ത് ഹരപ്പ എന്ന സ്ഥലത്ത
നിന്ന് മേജർ ജനറൽ ക്ലാർക്ക് എന്നൊരാൾ അപൂർവ്വമായൊരു വസ്തു കണ്ടെടുത്തു.
ഒരുതരം മൃദുശിലകൊണ്ടുള്ള ചെറുചതുരക്കട്ട. അതിന്മേൽ വലത്തോട്ടു മുഖമായി
നിൽക്കുന്ന കാളയുടെ രൂപം, അതിനു മുകളിൽ ആറു ചിഹ്നങ്ങളടങ്ങിയ ഒരു
ലിഖിതം—ഇതായിരുന്നു ആ വസ്തു. ഹരപ്പയിൽനിന്നു കിട്ടിയ ഈ മുദ്രയെക്കു
റിച്ച് 1875-ൽ, അന്ന് ഇന്ത്യയിലെ പുരാതത്വവകുപ്പിന്റെ മേധാവിയായിരുന്ന
അലക്സാൻഡർ കണ്ണിംഗ്ഹാം റിപ്പോർട്ടുചെയ്യുകയുണ്ടായി. പിന്നീടു കഷ്ടിച്ച്
അര നൂറ്റാണ്ടു കഴിഞ്ഞ് പുരാതത്ത്വവകുപ്പിലെ ദയാറാം സാഹ്നിയും ആർ. ഡി.
ബാനർജിയും ഹരപ്പയിലും മോഹഞ്ചോദാരോവിലും നടത്തിയ ഉൽഖനനങ്ങ
ളിൽ മറ്റു വസ്തുക്കളോടൊപ്പം സമാനമായ നിരവധി മുദ്രകളും കൂടി പുറത്തുവന്നു.
ഉൽഖനനത്തിനു നേതൃത്വം നൽകിയ സർ ജോൺ മാർഷൽ സൈന്ധവപരി
ഷ്കൃതിയെക്കുറിച്ചുള്ള തന്റെ ബൃഹദ്ഗ്രന്ഥത്തിൽ ഹരപ്പൻപരിഷ്കൃതിയെക്കുറിച്ചും
അതോടൊപ്പം സിന്ധുലിപിയെക്കുറിച്ചും എഴുതി. 1921-ൽ സിന്ധുനദീതടസംസ്കാ
രത്തിന്റെ അവശിഷ്ടങ്ങൾ പുറത്തുവന്നുതുടങ്ങിയതു മുതൽ ഇന്നോളം ആ വിഷ
യത്തിൽ നടന്നതും നടക്കുന്നതുമായ പഠനങ്ങൾ നിരവധിയാണ്. ചുരുക്കം
ചില അപവാദങ്ങളൊഴിച്ചാൽ, അത്തരം പഠനങ്ങളോരോന്നും ഒരുവിധത്തി
ലല്ലെങ്കിൽ മറ്റൊരുവിധത്തിൽ ആ പ്രാചീനപരിഷ്കൃതിയെക്കുറിച്ചുള്ള നമ്മുടെ
അറിവിനു മുതൽക്കൂട്ടായിട്ടുമുണ്ട്.

4)

കേരളത്തിലും അറബിക്കടലിലെ ലക്ഷദ്വീപുസമൂഹങ്ങളിലും അധിവസിച്ചുവരുന്ന മുസ്ലിംകളുടെ ഗാനസാഹിതീപാരമ്പര്യമാണിത് - ആ സമൂഹത്തിന്റെ സാംസ്കാരികാവിഷ്കാരങ്ങളിൽ ഏറ്റവും പ്രധാനപ്പെട്ടത്. മുസ്ലിംകളെ 'മാപ്പിളമാർ' എന്നു വിളിച്ചുവന്നിരുന്നതിനാൽ അവരുടെ പാട്ട് എന്ന താത്പര്യത്തിലാണ് ഈ പേര് നടപ്പായത്. അതിന്റെ വേരുകൾ കേരളത്തിലെ നാടൻപാട്ടിന്റെ മണ്ണിൽത്തന്നെയാണ്. നാടൻ ഈണത്തിനും 1
താളത്തിനും ഒപ്പം മുസ്ലിംകളുടെ മതവിശ്വാസാചാരങ്ങളുടെ പ്രഭവകേന്ദ്രമായ അറേബ്യയിലെ ഈണവും താളവും അതിൽ ഇടകലരുന്നുണ്ട് എന്നൊരു വിശേഷമുണ്ട്. സംഗീതത്തിന്റെ ഈ മിശ്രണംകൊണ്ട് 'ഇശൽ ' എന്നറിയപ്പെടുന്ന മാപ്പിളപ്പാട്ടിന്റെ ഗാനാലാപനരീതിക്ക് കൂടുതൽ ഹൃദയഹാരിതയും ചടുലതയും കൈവന്നിരിക്കുന്നു.

സംഗീതത്തിന്റെയും സാഹിത്യത്തിന്റെയും സമന്വയമാണ് മാപ്പിളപ്പാട്ട്. ഇതിൽ സംഗീതത്തിനാണ് മുൻതൂക്കം. അതുകൊണ്ടുതന്നെ ഇവിടെ പ്രാസവും ശബ്ദാലങ്കാരങ്ങളും വളരെ പ്രധാനമാണ്. ഇത്തരം ചിട്ടകൾ, വരികൾ ഓർമയിൽ നിൽക്കുവാൻ സഹായിക്കുന്ന നാടൻപാട്ടുകളുടെ സമ്പ്രദായത്തിന്റെ അവശേഷമാവാം.

മുസ്ലിംകളുടെ കല്യാണചടങ്ങുകളിൽ പ്രധാനം പാട്ടായിരുന്നു. ഒത്തുകൂടിയവരെ രസിപ്പിക്കുവാൻവേണ്ടി ഗായകസംഘങ്ങൾ പാടുന്ന കല്യാണപ്പാട്ടുകൾ ഒരു വക; മണവാളനെയും മണവാട്ടിയെയും കളിയാക്കിക്കൊണ്ട് കൂട്ടുകാർ കൈമുട്ടിപാടുന്ന ഒപ്പനപ്പാട്ടുകൾ മറ്റൊരു വക - സർവത്ര പാട്ടുമയം.

മാപ്പിളപ്പാട്ടുരചയിതാക്കളിൽ ഏറ്റവും പ്രമുഖൻ മോയിൻകുട്ടിവൈദ്യരാണ്. ഇന്നത്തെ മലപ്പുറം ജില്ലയിലെ കൊണ്ടോട്ടിയിൽ 1852 ൽ ജനിച്ച കവിയുടെ മുഖ്യകൃതികൾ ബദറുൽമുനീർ -ഹുസ്നുൽജമാൽ, ബദർ പടപ്പാട്ട്, ഉഹദ്പടപ്പാട്ട്, മലപ്പുറം പടപ്പാട്ട് എന്നിവയാണ്. സംഗീതത്തിന് പ്രാധാന്യം നൽകുന്ന സങ്കരഭാഷയാണ് ഈ കൃതികളിലെല്ലാം കാണുന്നത്. 1892 ൽ വൈദ്യർ നിര്യാതനായി.

5)

പ്രസിദ്ധ ഹീബ്രു രാജാവായ സോളമൻ ബി സി 1000–ൽ, മലബാർ തീരങ്ങളിൽനിന്ന് അമൂല്യവസ്തുക്കൾ ശേഖരിക്കാനായെത്തുന്ന ഫൊണീഷ്യൻ രാജാവായ 'ഹിരാ'മുമായി ഒരു കരാറിലേർപ്പെടുകയുണ്ടായി. ഫൊണീഷ്യർ മലബാറിൽ വിഭവങ്ങൾ ശേഖരിക്കാനായി പോകുമ്പോൾ സോളമൻ രാജാവിന്റെ സേവകരെക്കൂടി കൂട്ടിക്കൊണ്ടുപോകണമെന്നതായിരുന്നു ആ കരാർ. അങ്ങനെ സോളമൻ രാജാവിന്റെ സേവകർ ഇവിടെ വന്ന് 'ഓഫീറി'ൽനിന്ന് വിലയേറിയ രത്നങ്ങളും സ്വർണവുമെല്ലാം ശേഖരിച്ചു കൊണ്ടുപോകുമായിരുന്നുവത്രേ.[3] (*ബൈബിൾ*)

സോളമൻ രാജാവിന്റെ കാലത്തിനു മുൻപുതന്നെ പ്രസിദ്ധമായിത്തീർന്നിരുന്നതും *ബൈബിളിൽ* പ്രത്യേകം പരാമർശിക്കപ്പെടുന്നതുമായ 'ഓഫീർ' എന്ന സ്ഥലം തിരുവനന്തപുരം ജില്ലയിലെ നെയ്യാറ്റിൻകരക്കടുത്തുള്ള പൂവ്വാർ ആയിരിക്കാനാണ് സാധ്യതയെന്ന് ഡോ. ബീർനെൽ അഭിപ്രായപ്പെടുന്നു.[4] (നാഗം അയ്യ)

6)

എന്റെ പ്രാർഥനാമുറിയിൽ ഒരു പൂജാമണി ഇരിക്കുന്നു. അതിന്റെ കൈപ്പിടിയുടെ മുകളിൽ ഒരു കാളയുടെ ചെറുതെങ്കിലും മനോഹരമായ രൂപമുണ്ട്. മണിയുണ്ടാക്കിയ മൂശാരി എന്തിനാണ് ആ ഋഷഭ വിഗ്രഹം അവിടെ പ്രതിഷ്ഠിച്ചത്? മണി തീർപ്പിച്ച കാരണവർ അങ്ങനെയൊരു കാളയെകൂടി അവിടെ ഉണ്ടാക്കി വയ്ക്കണമെന്നു പറഞ്ഞിരുന്നുവോ? സംശയം. എങ്കിലും മൂശാരി രൂപകല്പനയ്ക്കുള്ള തന്റെ ചാതുര്യവും മനോധർമ്മവുംകൂടി ഒന്നു പ്രദർശിപ്പിച്ചേക്കാമെന്നു കരുതി. അങ്ങനെ ആ മണി ഒരു പൂജോപകരണമെന്നതിൽക്കവിഞ്ഞ് ഒരു കലാസൃഷ്ടിയായി മാറി.

പാക്കുവെട്ടി എത്ര സുന്ദരമായി നിർമ്മിച്ചാലും അതൊരു കലാസൃഷ്ടിയാണെന്നു പറയാൻ തരമില്ല. എന്നാൽ മയിലിന്റെയോ മഞ്ചലിന്റെയോ ആകൃതിയിൽ പാക്കുവെട്ടിയിലൂടെ പുതിയൊരു രൂപകല്പന ചെയ്താൽ അതു കലാസൃഷ്ടിയായി മാറുന്നു .വെളിച്ചം കാണാൻ സാധാരണ നിലവിളക്കുമതി. പക്ഷേ, ഗജലക്ഷ്മീരൂപാലംകൃതമായ തൂക്കുവിളക്കായി മാറിയപ്പോൾ സൗന്ദര്യത്തിന്റെ പുതുവെളിച്ചംകൂടി നമ്മുടെ കണ്ണുകൾക്ക് ലഭിച്ചു. തൂക്കുവിളക്കിനു മൂന്നും നാലും തട്ടുകളുണ്ടായപ്പോൾ ദീപോത്സവും, നയനോത്സവും തന്നെയായി.

7)

തിരുവനന്തപുരത്തു നിന്ന് കോട്ടയത്തേക്ക് പോകാൻ നാലുമണിക്കൂറു മതി. നാലുമണിക്കൂറു കൊണ്ട് ട്രെയിൻ കോട്ടയത്തെത്തും. അതേ ട്രെയിൻ തന്നെ എറണാകുളത്തെത്താൻ കൂടുതൽ സമയമെടുക്കും. എന്താ കാര്യം?

ദൂരം കൂടുതലാണെങ്കിൽ അത്രയും ദൂരം പോകാൻ കൂടുതൽ സമയം വേണം. അതുതന്നെ കാര്യം. ഇതുതന്നെ ഗ്രഹങ്ങളുടെ പ്രദക്ഷിണത്തിന്റെ കാര്യവും. ഏറ്റവും കൂടുതൽ ഓടേണ്ട ഗ്രഹത്തിന് ഏറ്റവും കൂടുതൽ സമയം വേണം. പ്രദക്ഷിണം വയ്ക്കാൻ ഏറ്റവും ദൂരം പോകേണ്ടത് ഏത് ഗ്രഹത്തിനാ? സൂര്യനിൽ നിന്ന് ഏറ്റവും അകലെയുള്ളതിന്, അല്ലേ? ഏറ്റവും അടുത്തുള്ള ഗ്രഹത്തിന് ഏറ്റവും കുറച്ചുദൂരം സഞ്ചരിച്ച് പ്രദക്ഷിണം പൂർത്തിയക്കാം. ഏറ്റവും അകലെയുള്ള ഗ്രഹത്തിനാണെങ്കിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ സഞ്ചരിച്ചാലേ പ്രദക്ഷിണം പൂർത്തിയാക്കാനാവൂ.

സൂര്യനോട് ഏറ്റവും അടുത്തുള്ളത് ബുധനാണ് . ഏറ്റവും അകലെയുള്ളത് പ്ലൂട്ടോയാണ്. ഭൂമിയോ? ബുധനെക്കാൾ ദൂരെയാണ്. പ്ലൂട്ടോയെക്കാൾ അടുത്താണ്.

7

7 निम्नलिखित अनुच्छेद को मलयालम में अनुवाद कीजिए। 10

उन्नीसवीं शताब्दी में ही हिंदी के उत्थान का कार्यक्रम बनना आरंभ हो गया था। इसके लिए जब संगठित प्रयास करने की ज़रूरत महसूस हुई तो सर्वश्री श्यामसुंदरदास, रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह ने 1893 में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। स्वामी दयानंद के एक अनुयायी ठाकुर गदाधर सिंह ने अपना विशाल पुस्तकालय, जो 'आर्य भाषा पुस्तकालय' कहलाता था, नागरी प्रचारिणी सभा को भेंट कर दिया था। आज भी सभा के इस समृद्ध पुस्तकालय का नाम 'आर्य भाषा पुस्तकालय' है।

नागरी प्रचारिणी सभा के द्वारा अनेक रचनात्मक एवं प्रचारात्मक कार्यक्रम हुए। उत्तर प्रदेश की अदालतों और सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग करने के लिए शासन से निवेदन किया गया। महामना मालवीयजी के नेतृत्व में जब यह कार्य आरंभ किया गया तो उसमें सफलता मिली और धीरे-धीरे राजस्व, न्याय तथा सामान्य प्रशासन आदि के आरंभिक स्तरों पर हिंदी में काम होने लगा। ध्यान रहे कि उस समय तक राज़काज की भाषा उर्दू थी और न केवल ब्रिटिश भारत में, बल्कि अनेक देशी रियासतों में भी उर्दू का वर्चस्व था।

—x—